तेहरान के माध्यम से शांति का रास्ता

यह आलेख सामान्य अध्ययन प्रश्न-II (अंतर्राष्ट्रीय संबंध) से संबंधित है।

द हिन्दू

लेखक- अनीता इंदर सिंह (नई दिल्ली में सेंटर फॉर पीस एंड कंफ्लिक्ट रिजोल्यूशन के संस्थापक प्रोफेसर)

08 फरवरी, 2019

"ईरानी कार्ड भारत के लिए अफगानिस्तान को स्थिर करने में अपनी भूमिका बढ़ाने में मद्द कर सकता है।"

भले ही अफगानिस्तान से एक अमेरिकी सैन्य के वापस जाने की खबरे सुर्खियों में है, मगर यू.एस. एक स्थिर देश को पीछे छोड़ना चाहेगा। और अफगानिस्तान में कोई भी शांति समझौता यदि क्षेत्रीय शक्तियों द्वारा समर्थित होती है तो इसे फिर से पटरी पर लाने का बेहतर मौका बन जायेगा। दूसरे शब्दों में, ईरान सहित अफगानिस्तान और उसके पड़ोसियों के बीच संबंध, दक्षिणी और पश्चिमी एशिया की सुरक्षा को प्रभावित करेंगे। भारत, रूस, चीन और अमेरिका की तरह ही ईरान भी अफगानिस्तान में शासन पर एक मजबूत स्थिति को देखना चाहेगा। सैन्य प्रभाव में कमी के बावजूद, भारत अफगानिस्तान को सुरक्षित करने के लिए अमेरिका और ईरान के साथ अपने अच्छे संबंधों का निर्माण कर सकता है।

ईरानी निरंतरता

अफगानिस्तान में क्षेत्रीय कूटनीति के लिए ईरान कोई नवागंतुक नहीं है। सबसे पहले, भारत को अमेरिकी नजरिये, जहाँ अमेरिका ईरान, रूस और चीन को अपने दुश्मनों के रूप में देखता है, को बदलने की कोशिश करनी चाहिए। वास्तव में, अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प की तीनों राष्ट्रों के प्रति शत्रुता की भावना अफगानिस्तान में अपने सैन्य अभियान को समाप्त करने के लिए उनके साथ पूर्व विवाद से संबंधित है। उदाहरण के लिए, 2014 से 2016 तक, वाशिंगटन और मास्को ने चुपचाप अफगान शांति प्रक्रिया पर वार्ता की व्यवस्था की। 6 + 1 समूह के रूप में जाने जानी वाली बैठकों में अफगानिस्तान, चीन, भारत, ईरान, पाकिस्तान, रूस और अमेरिका के प्रतिनिधि शामिल थे।

6 + 1 प्रक्रिया ने माना कि इनमें से प्रत्येक देश अफगानिस्तान में एक राजनीतिक समझौते की उपलब्धि के लिए आवश्यक है। इसके अलावा, पिछले नवंबर में, अमेरिका और तालिबान अफगानिस्तान में शांति और राष्ट्रीय सुलह हासिल करने के लिए बातचीत के समाधान को बढ़ावा देने की उम्मीद में पहली बार रूस द्वारा आयोजित सम्मेलन में शामिल हुए थे।

क्षेत्रीय शक्तियां एक समझौता निपटान के पीछे अपना जोर डाल सकती हैं जो अफगानिस्तान की स्थिरता को सुनिश्चित करेगा। ईरान, रूस और चीन और मध्य एशियाई राज्य जिनके साथ भारत और अफगानिस्तान आतंकवाद का मुकाबला करने में सहयोग चाहते हैं उन्हें भय है कि यदि अफगानिस्तान में अस्थिरता जारी रहती है तो ये अशांति उनके देशों में भी फैल सकती हैं। इसके अलावा, अगर वार्ता विफल रहती है तो भारत पर भी इसका प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। जिसके बाद, पाकिस्तान से अफगानिस्तान या भारत को होने वाले चरमपंथी निर्यात में वृद्धि हो जाएगी।

अफगानिस्तान को सुरक्षित करने के लिए ईरानी राजनयिक विकल्पों का पता लगाना भारत के लिए सार्थक साबित हो सकता है। तेहरान के साथ अच्छे संबंध, नई दिल्ली को दक्षिणी ईरान में चाबहार बंदरगाह को विकसित करने में मद्दगार साबित होगी। और चाबहार से परे, भारत, ईरान और रूस अंतर्राष्ट्रीय उत्तर-दक्षिण परिवहन गलियारा परियोजना के संस्थापक देश थे। इस गलियारे का उद्देश्य भारत, ईरान, रूस, अफगानिस्तान और मध्य एशिया और यूरोप के बीच संपर्क बढ़ाना है। साथ ही यह उनके व्यापारिक हितों को भी आगे बढ़ाएगा।

भारत वाशिंगटन को अफगानिस्तान पर अमेरिकी और ईरानी हितों के पिछले संयोग के बारे में याद दिला सकता है। अमेरिका और भारत के साथ मिलकर, ईरान ने 2001 में तालिबान को उखाड़ फेंकने का समर्थन किया था। उस वर्ष बॉन में हुई अंतर्राष्ट्रीय वार्ता में, ईरान ने राष्ट्रपति के रूप में हामिद करजई की स्थापना का समर्थन किया और अपनी सरकार से तालिबान के बहिष्कार का समर्थन किया था।

आमतौर पर, यू.एस.-ईरान संबंध अनियंत्रित ही रहा है। जैसा कि 2005 के बाद अमेरिका ने ईरान पर प्रतिबंध लगाए थे, तब ईरान ने तालिबान को अपनी सीमाओं पर अमेरिकी प्रभाव का मुकाबला करते देखा था। ईरान ने अफगानिस्तान में अमेरिकी उपस्थिति का विरोध करना जारी रखा है, क्योंकि उसे डर है कि अफगानिस्तान में अमेरिकी सैनिकों को इसके खिलाफ इस्तेमाल किया जा सकता है। ईरानी आशंकाओं के लिए, अफगानिस्तान ने हाल ही में कहा कि वह अमेरिका को ईरान के खिलाफ आक्रामकता के किसी भी कार्य को करने के लिए अपने देश में अपने अड्डों का उपयोग करने की अनुमति नहीं देगा।

पिछले दिसंबर में, ईरान ने भी तालिबान के साथ अफगान सरकार के जानकारी में बातचीत की थी। लेकिन इसे काबुल को अपने अच्छे इरादों का आश्वासन देना होगा, तभी बातचीत का कोई लाभ दिख पाएगा। हाल के महीनों में अफगान अधिकारियों ने ईरान पर आरोप लगाया है कि अमेरिका पश्चिमी अफगानिस्तान में अपने प्रभाव को बढ़ाने की कोशिश कर रहा है, ताकि तालिबान को धन, हथियार और विस्फोटक सामग्री मुहैया कराया जा सके। हांलाकि, ईरान ने इन आरोप से खुद को दरकिनार कर लिया।

अमेरिकी और ईरान को आपसी और क्षेत्रीय संबंधों में सुधार के फायदे की सलाह दी जा सकती है। इस तरह के फायदे अफगानिस्तान में स्थिरता को आगे बढ़ा सकते हैं, विशेषकर दक्षिण और पश्चिम एशिया में व्यापार की संभावनाओं को बढ़ाने के मद्देनजर।

जीत की संभावनाएं

ईरान सुरक्षित अफगानिस्तान के साथ व्यापारिक संबंध मजबूत करके लाभ प्राप्त कर सकता है। 2017 में इसने पाकिस्तान को अफगानिस्तान का सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार माना। ऐसे समय में जब ईरान की अर्थव्यवस्था को अमेरिकी प्रतिबंधों से तौला जा रहा है, तो निश्चितरूप से वह पड़ोसी राज्यों के साथ व्यापार संबंध बनाना चाहेगा।

यू.एस. को भी इससे लाभ प्राप्त होगा। आखिरकार, ईरान दक्षिण, मध्य और पश्चिम एशिया और काकेशस को जोड़ने वाला एक भू-राजनीतिक केंद्र है। होर्मुज जलडमरूमध्य, जो कि एक महत्वपूर्ण पाइपलाइन भी है, ईरान को पश्चिम में फारस की खाड़ी और यूरोप से जोड़ती है और पूर्व में ओमान की खाड़ी, दक्षिण और पूर्वी एशिया से जोड़ती है। इसके अलावा, अमेरिका के यूरोपीय सहयोगियों द्वारा अमेरिका-ईरान संबंधों में सुधार का स्वागत किया जाएगा, जो ईरान पर वाशिंगटन के एकतरफा प्रतिबंधों के विरोध में थे।

निश्चितरूप से अमेरिका को अफगानिस्तान की सुरक्षा में सुधार के लिए ईरान के साथ कार्य करने का मौका नहीं गंवाना चाहिए। और, जैसा कि अमेरिका अफगानिस्तान से वापसी के विचार को प्रसारित कर रहा है, तो अब भारत के पास एक अच्छा मौका है कि वह इनके बीच ईमानदारी से एक अच्छे बिचौलिए के रूप में कार्य करे और इनके बीच क्षेत्रीय सुरक्षा में एक बड़ी भूमिका निभाए।

क्षेत्रीय शक्तियों के रूप में भारत और ईरान की स्थिति और साथ ही दक्षिण, मध्य और पश्चिम एशिया की स्थिरता एक साथ बढ़ जाएगा। फिलहाल, हमें यही उम्मीद करनी चाहिए कि ईरान और रूस और चीन के विरोध में अमेरिका द्वारा महाशक्ति का प्रदर्शन श्री ट्रम्प के अफगानिस्तान को स्थिर करने के इस अवसर को अवरुद्ध नहीं करे।

GS World टीम...

होर्मुज जलडमरूमध्य या जलसंधि

क्या है?

- होर्मुज जलसन्धि ईरान के दक्षिणी भाग में स्थित है, जो फारस की खाड़ी को ओमान की खाड़ी से जोड़ने वाला एक प्रमुख जलमार्ग है।
- विश्व में करीब 40 प्रतिशत तेल और बड़ी मात्रा में प्राकृतिक गैस इसी मार्ग से विभिन्न देशों व क्षेत्रों तक पहुँचाए जाते हैं।
- होर्मुज जलसन्धि को फारसी में तंगेह-ए-होरमुज नाम से जाना जाता है।

महत्व

- यह पश्चिम एशिया की एक प्रमुख जलसन्धि है, जो ईरान के दक्षिण में फारस की खाड़ी को श्ओमान की खाड़ी से जोड़ती है।
- इसके दक्षिण में संयुक्त अरब अमीरात और ओमान का मुसन्दम नामक बहिक्षेत्र है।
- बहरीन, ईरान, इराक, कुवैत, कतर, सऊदी अरब और संयुक्त अरब अमीरात अपने कच्चे तेल की आपूर्ति के लिये इस संकीर्ण मार्ग पर निर्भर करते हैं।
- दुनिया का लगभग 30 प्रतिशत समुद्री व्यापारिक कच्चा तेल होर्मुज के जलडमरूमध्य से गुजरता है।
- जलडमरूमध्य के चारों तरफ कई सारे पहाड़ और चट्टानें हैं जो कई द्वीपों जैसे सलामाह वा बनतिहा द्वीप, मुसंदम द्वीप और पक्षी द्वीप बनाते हैं।

- इस जलसन्धि के सबसे कम चौड़े स्थान पर दोनों तटों में 39 किलोमीटर की दूरी है।

जलडमरूमध्य (strait) के वाणिज्यिक और सामरिक महत्व

- समुद्री व्यापार के लिए वाणिज्यिक नौ-परिवहन
- महत्वपूर्ण तेल उत्पादन क्षेत्र
- भू-राजनीति में महत्वपूर्ण भूमिका

दुनिया की प्रमुख जलडमरूमध्यों (जलसंधियों) की सूची

1. मलक्का जलडमरूमध्य (strait)
   मध्य: अंडमान सागर और दक्षिण चीन सागर
   स्थान: इंडोनेशिया- मलेशिया
2. पाक जलडमरूमध्य (strait)
   मध्य: पाक खाड़ी और बंगाल की खाड़ी
   स्थान: भारत-श्रीलंका
3. सुंडा जलडमरूमध्य (strait)
   मध्य: जावा सागर और हिंद महासागर
   स्थान: इंडोनेशिया
4. युकेटन जलडमरूमध्य (strait)
   मध्य: मेक्सिको की खाड़ी और कैरेबियन सागर
   स्थान: मेक्सिको-क्यूबा
5. मेसिना जलडमरूमध्य (strait)
   मध्य: भूमध्य सागर
   स्थान: इटली-सिसिली
6. ओटरंटो जलडमरूमध्य (strait)
   मध्य: एड्रियाटिक सागर और आयनियन सागर
   स्थान: इटली-अल्बानिया
7. बाब अल-मन्देब जलडमरूमध्य (strait)
   मध्य: लाल सागर और अदन की खाड़ी
   स्थान: यमन-जिबूती
8. कुक जलडमरूमध्य (strait)
   मध्य: दक्षिण प्रशांत महासागर
   स्थान: न्यूजीलैंड (उत्तर और दक्षिण द्वीप)
9. मोजाम्बिक जलडमरूमध्य (strait)
   मध्य: हिंद महासागर
   स्थान: मोजाम्बिक -मालगासी
10. उत्तरी चैनल
    मध्य: आयरिश सागर और अटलांटिक महासागर
    स्थान: आयरलैंड-इंग्लैंड
11. वृषभ जलडमरूमध्य (strait)
    मध्य: अराफुरा सागर और पापुआ की खाड़ी
    स्थान: पापुआ न्यू गिनी - ऑस्ट्रेलिया
12. बास जलडमरूमध्य (strait)
    मध्य: तस्मान सागर और दक्षिण सागर
    स्थान: ऑस्ट्रेलिया
13. बेरिंग जलडमरूमध्य (strait)
    मध्य: बेरिंग सागर और चुकची सागर
    स्थान: अलास्का-रूस
14. बोन- फसियो जलडमरूमध्य (strait)
    मध्य: भूमध्य सागर
    स्थान: कोर्सिका - सर्दिनिया
15. बोस्फोरस जलडमरूमध्य (strait)
    मध्य: काला सागर और मार्मारा सागर
    स्थान: तुर्की
16. दर्देलीज जलडमरूमध्य (strait)
    मध्य: मार्मारा सागर और ईजियन समुद्र
    स्थान: तुर्की
17. डेविस जलडमरूमध्य (strait)
    मध्य: बाफिन खाड़ी और अटलांटिक महासागर
    स्थान: ग्रीनलैंड-कनाडा
18. डेनमार्क जलडमरूमध्य (strait)
    मध्य: उत्तर अटलांटिक और आर्कटिक महासागर
    स्थान: ग्रीनलैंड-आइसलैंड
19. डोवर जलडमरूमध्य (strait)
    मध्य: अंग्रेजी चैनल और उत्तरी सागर
    स्थान: इंग्लैंड-फ्रांस
20. फ्लोरिडा जलडमरूमध्य (strait)
    मध्य: मैक्सिको और अटलांटिक महासागर की खाड़ी
    स्थान: संयुक्त राज्य अमेरिका-क्यूबा
21. होर्मुज जलडमरूमध्य (strait)
    मध्य: फारस और ओमान की खाड़ी
    स्थान: ओमान-ईरान
22. हडसन जलडमरूमध्य (strait)
    मध्य: हडसन और अटलांटिक महासागर की खाड़ी
    स्थान: कनाडा
23. जिब्राल्टर जलडमरूमध्य (strait)
    मध्य: भूमध्य सागर और अटलांटिक महासागर
    स्थान: स्पेन-मोरक्को
24. मैगलन जलडमरूमध्य (strait)
    मध्य: प्रशांत और दक्षिण अटलांटिक महासागर
    स्थान: चिली
25. मकास्सर जलडमरूमध्य (strait)
    मध्य: जावा सागर और सेलेबेज सागर
    स्थान: इंडोनेशिया
26. त्सुन्गारू जलडमरूमध्य (strait)
    मध्य: जापान सागर और प्रशांत महासागर
    स्थान: जापान (होक्काइदो-होन्शु द्वीप)
27. तटरत जलडमरूमध्य (strait)
    मध्य: जापान सागर और ओखोटस्क सागर
    स्थान: रूस (पूर्वी रूस-सखालिन द्वीप)
28. फावेओक्स जलडमरूमध्य (strait)
    मध्य: दक्षिण प्रशांत महासागर
    स्थान: न्यूजीलैंड (दक्षिण आइलैंड-स्टीवर्ट द्वीप)
29. फॉर्मोसा जलडमरूमध्य (strait)
    मध्य: दक्षिण चीन सागर और पूर्वी चीन सागर
    स्थान: चीन-ताइवान

संभावित प्रश्न (प्रारंभिक परीक्षा)

1. 'होर्मुज जलडमरूमध्य' के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए-

   1. यह ईरान को पश्चिम में फारस की खाड़ी और यूरोप से जोड़ती है।
   2. यह पूर्व में ओमान की खाड़ी को दक्षिण और पूर्वी एशिया से जोड़ती है।

   उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सत्य है/हैं?

   (a) केवल 1
   (b) केवल 2
   (c) 1 और 2 दोनों
   (d) न तो 1 और न ही 2

1. **Consider the following statements regarding Hormuz strait-**

   1. It joins Persion Gulf with Europe in the west of Iran.
   2. It joins the Gulf of Oman in east with South and East Asia.

   Which of the above statements is/are correct?

   (a) Only 1
   (b) Only 2
   (c) Both 1 and 2
   (d) Neither 1 nor 2

संभावित प्रश्न (मुख्य परीक्षा)

प्रश्न: अफगानिस्तान की स्थिरता में भारत द्वारा किये जा रहे प्रयासों को सफल बनाने में ईरान की क्या भूमिका हो सकती है? मूल्यांकन कीजिए। **(250 शब्द)**

Q. What roles can Iran play in making the efforts made by India to stabilize Afghanistan successful? **(250 Words)**

नोट : 7 फरवरी को दिए गए प्रारंभिक परीक्षा (संभावित प्रश्न) का उत्तर 1(d) होगा।

GS World
Committed To Excellence